वनवास के बाद पांडवों ने कुरुक्षेत्र की लड़ाई जीती और युधिष्ठिर साम्राज्य के राजा बन गए। उनके राज्य में एक गरीब ब्राह्मण था जो अपनी बेटी की शादी करना चाहता था। उसके पास पैसे कम थे। इसलिए उसने युधिष्ठिर से संपर्क किया और कुछ सोने की मांग की ताकि वह शादी का खर्चा कर सके। युधिष्ठिर की कुछ जरूरी बैठक थी। उन्होंने ब्राह्मण से कहा, 'मैं आज व्यस्त हूं। कृपया सोने को लेने के लिए कल आना।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भीमसेन, जो पास ही खड़े थे, उन्होंने वार्तालाप सुनने के बाद प्रधान मंत्री को बुलाया और शहर में बड़ा उत्सव मनाने का आदेश दिया। प्रधान मंत्री ने कारण पूछने की हिम्मत नहीं की। उन्होंने शहर में वैसी घोषणा कर दी। आतिशबाजी, संगीत आदि शुरू हुआ। युधिष्ठिर ने प्रधान मंत्री से पूछा, 'ये कौनसा उत्सव हैं? आज कोई त्यौहार नहीं है!' उन्हें जवाब मिला कि भीमसेन ने उत्सव का आदेश दिया है।

जब युधिष्ठिर ने भीमसेन से पूछताछ की, तो भीमसेन ने कहा, 'आपने एक महान कामयाब हासिल की है!' 'मैंने?' युधिष्ठिर ने पूछा। भीमसेन ने कहा, 'हाँ भाई! आपने मौत पर विजय प्राप्त की है।' युधिष्ठिर ने कहा,' क्या तुम पागल हो गए हो? कोई मृत्यु को जीत सकता है भला?' भीमसेन ने कहा,' मैं सही हूं भैय्या, अन्यथा आपने उस ब्राह्मण को यह नहीं कहा होता कि कल आना। इसका मतलब है कि आप निश्चित रूप से जानते हैं कि आप अगले दिन तक नहीं मरोगे और आप अपने मृत्यु के समय पर नियंत्रण रखने में सफल हुए हो! यदि नहीं, तो आपके वादे का क्या होगा, यदि आप आज मर गये? आप अच्छी तरह से जानते हैं कि जो व्यक्ति को वादा

नहीं रखता, वो भगवान द्वारा दंडनीय है!'

युधिष्ठिर ने अपनी गलती को महसूस किया। उन्होंने सोचा 'ये मोटा है, लेकिन इसकी अकल बड़ी पतली है!' उन्होंने ब्राह्मण को बुलवाया और उसे सोना दिया।

इस कहानी के दो पहलू हैं।
1. अच्छे कार्य करने में देरी न करो।
2. कल को मत गिनो। कौन जानता है? कल जीवन में हो ना हो!